संपादकीय

मानव के विकास के साथ ही,मानव समाज को समुचित तरीके से संचालन हेतु, समय समय पर, कई तरह की शासन प्रणालियां अस्तित्व में आईं। अनुभवजनित गुण दोषों तथा नवीन अवधारणाओं के अनुरूप इनमें विकास प्रक्रिया भी निरंतर चलती रही। मानव समाज क्रमशः कबीलों, गणतंत्र, धार्मिक संप्रभुतावाद, राजशाही, साम्यवाद, तानाशाही, लोकतंत्र आदि कई शासन प्रणालियों के नफे नुकसान का अनुभव कर चुका है। अब तक विकसित मानव समाज की विभिन्न शासन प्रणालियों में, आज सबसे ज्यादा लोकप्रिय तथा आदर्श मानी जाने वाली व्यवस्था का नाम है ''लोकतंत्र''। वैसे तो विश्व के विभिन्न विचारकों ने समय-समय पर लोकतंत्र की अलग-अलग परिभाषाएं दी हैं, लेकिन अब्राहम लिंकन की परिभाषा उल्लेखनीय है - 'लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा शासन - प्रामाणिक माना जाता है। लोकतंत्र में जनता ही सत्ताधारी होती है, उसकी अनुमति से शासन होता है, उसकी प्रगति को ही शासन का एकमात्र लक्ष्य माना जाता है।'

सत साहित्य का चिंतक ही अमर और कल्याणकारी साहित्य रच सकता है

विख्यात साहित्यकार, चिंतक आचार्य **अमरनाथ त्यागी** से **राजाराम त्रिपाठी** की बातचीत

परिचय-- बहुमुखी प्रतिभा के धनी, प्रसिद्ध और लोकप्रिय कवि एवं साहित्यकार अमरनाथ त्यागी एक उत्कृष्ट खिलाड़ी, एथलीट एवं कलापारखी होने के साथ-साथ चिंतक, साधक, पर्यावरणविद् तथा समाजसेवी रहे हैं। आप राष्ट्रीय विचारधारा के प्रखर देशभक्त कवि के रूप में जहां प्रतिष्ठित हुए, वहीं प्रेरणादायक वीर-रस पूर्ण काव्य एवं भक्ति-काव्य के उत्कृष्ट एवं समृद्ध कवि मनीषी के रूप में स्थापित हैं। आपने अनेक ग्रंथों की रचना की है। छत्तीसगढ़ की रामायण (गद्य एवं पद्य), प्रबंध काव्य-कृष्ण चरित मानस, पद्यानुवाद-श्रीमद भागवद् गीता, खंड-काव्य --महाराणाप्रताप, काव्य-संकलन- श्री गोविंद विलास, जहां चंदन महकते हैं, सहस्र-सुमन आदि। आप छ.ग. हिंदी साहित्य मंडल एवं इंडियन सोसायटी ऑफ आथर्स, न. दिल्ली के छत्तीसगढ़ चेप्टर के अध्यक्ष हैं।

प्र. छत्तीसगढ़ की रामायण जैसे धार्मिक ग्रंथ के लेखक के रूप में बात शुरू करने के लिये आप किन संदर्भों को जरूरी मानते हैं? पर्यावरण,धरती या आज का समाज, बदलती संस्कृति की ओर लोगों का रुझान या ऐसे ही कुछ और कारण?

उ. छत्तीसगढ़ की रामायण का लेखन शुरू करने के लिए जिन संदर्भ को जरूरी माना गया है उनमें छत्तीसगढ़ की अस्मिता, इसके प्राचीन इतिहास और विश्व पटल पर भारत को महान बनाने में दिए गए योगदान का विस्मरण! इस विस्मृति से नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति

विभिन्न तथ्यों की पहचान, जांच-परख आपने कैसे की?

उ. 536 पृष्ठ का यह ग्रंथ छत्तीसगढ़ की रामायण ग्रंथ-माला का प्रथम पुष्प 'बालकांड' के रूप में प्रस्तुत है! अभी इसके अयोध्या कांड के अतिरिक्त 6 भाग शेष है! इसे शोध परक इसलिए कहा जाता है कि इसमें दंडकारण्य के लाखों वर्षों के प्राचीन इतिहास पर प्रथम बार विस्तृत प्रकाश डाला गया है और इसकी प्राचीन भाषा, संस्कृति, सभ्यता, उद्योग धंधे,

आचार्य श्री अमरनाथ त्यागी
सुंदर नगर, रायपुर (छत्तीसगढ़)
मो. 89826-93033

डॉ. राजाराम त्रिपाठी
संपादक 'ककसाड़'
मो. 94252-58105